मंथन समूह सफलता की कहानी...

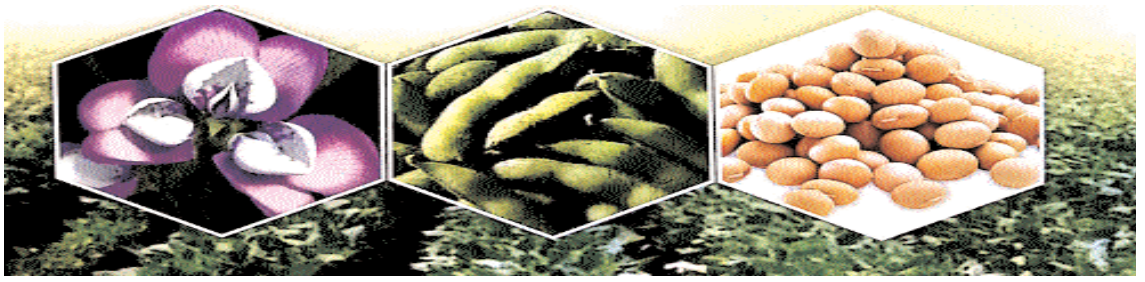

---प्रेरणादायक किसानों की सफल गाथाएं---

जैविक खेती करने की ठान कर अच्छी उपज प्राप्त करने के जुनून से रिस्क लेकर किसान संतोष मण्डलोई ने कम लगात में अधिक उत्पादन की खोज निकाली नई तकनीक

आज किसान सबसे ज्यादा परेशान है। क्योंकि जिस परिवेश में वह रहता है वह परिवेश उसे और परेशान कर देता है। कारण जिस फसल को वह पैदा करता है। उसी आनाज को वह खाता है। यही आनाज शहर वाले भी खाते हैं। लेकिन शहरवासी न तो रासायन खेत में डालने का काम करते हैं और ना ही इल्लीमार छिड़कते हैं और ना तो खरपतवारनाशी दवा छिड़कते हैं और ना ही कीड़ामार दवाई डालते हैं। और ना ही फंगस वाली दवाई खेत में डालते हैं। और किसान ये सब दवाई और रासायनिक खाद खेत में डालते भी और उस रासायनयुक्त आनाज का उपभोग भी करते हैं। यानी किसान रासायन के सम्पर्क में सबसे ज्यादा रहता है। इस केमिकल का किसान के शरीर पर कितना बुरा असर पड़ता है। यह एक रिसर्च का विषय है। लेकिन इतनी बात तो सच है कि इंसान के शरीर पर इस रासायन का बहुत बुरा प्रभाव पड़ रहा है। जैसा कि बच्चों के शरीर में समय से पहले हार्मोंस का विकसित होना।

मेरा नाम संतोष मण्डलोई है मैं ग्राम कोटरी तहसील आष्टा जिला सीहोर का रहने वाला हूँ। मेरे साथ मंथन ग्रामीण समाज सेवा के क्षेत्राधिकारी श्री राजेश वर्मा जी हैं। मैंने जो अनुभव किया मेरे साथ जो घटना घटी वह मैं श्री राजेश वर्मा जी के समक्ष प्रस्तुत कर रहा हूँ। मैं सन् 1989 से खेती के काम में लगा हूँ। अच्छी फसल पैदा करना मेरा शौक बन गया था। मैं अच्छी रासायनिक खाद खेतों में देता और अच्छी दवाई का स्प्रे फसल में करता था क्योंकि मुझे अच्छी उपज प्राप्त करने का जुनून था। 22 अगस्त 2019 को खरीफ सीजन में मैंने सोयाबीन की फसल में इल्लीमार दवा कोराजन डाल रहा था। दवाई डालते समय मैं दिन भर की बारिश में भीगता रहा। दवाई डालकर मैं शाम को घर आया। भोजन किया और सो गया।

रात को 1.30 बजे मेरे पूरे शरीर में हल्की जलन होने लगी और पेट में पटाखे फूटने जैसा अजीब सा होने लगा फिर उल्टी और दस्त होने लगे। मैं बार-बार दस्त गया। सुबह डॉक्टर को दिखाया दवाईयां ली। लेकिन आराम नहीं हुआ। फिर दूसरे डॉक्टर को दिखाया लेकिन फिर भी आराम नहीं मिला और परेशानी बढ़ती चली गई। फिर सीहोर में डॉक्टर को दिखलाया लेकिन कोई राहत नहीं मिली। उसके बाद भोपाल एम्स में दिखाया वहां पर उन्होंने कुछ जांचे करवाई सभी जांच सामान्य थीं, वहां पर डॉक्टर की टीम ने मुझे कुछ टेबलेट्स दीं और कहा कोई दिक्कत नहीं है। लेकिन वहां से भी कोई आराम नहीं मिला पाया। मेरे तबीयत इतनी बिगड़ गई कि मेरे स्वास्थ्य को लेकर पूरे परिवार को चिंता होने लगी। फिर मैंने अपोलो हास्पिटल इन्दौर में दिखाया वहां पर डॉक्टरों ने मेरी बहुत सारी जांचे करवाईं सभी जांचे नार्मल थीं। डॉक्टर बोले तुम्हे कोई परेशानी नहीं है। कुछ दवाईयां दी। उन्हें खाने पर परेशानी और बढ़ जाती। फिर डॉक्टर को दिखलाता लेकिन परेशानी हल नहीं हो रही थी। तब मेरे दिमाग में एक बात बहुत अच्छे से समझ में आई कि शरीर स्वस्थ्य है। सब कुछ ठीक है। अन्यथा सब दुनिया बेकार है। जान है तो जहान है। मेरे समझ में यह बात अच्छे से आ गई कि शरीर के अस्वस्थ होने का कारण रासायनिक खेती से उत्पन्न आनाज हैं जो हम खाते हैं उसी के कारण मेरी तबियत इतनी खराब हुई है।

तभी से मैंने जैविक खेती करने की ठान ली इसलिए मैं जैविक खेती कर रहा हूँ। जब मैं जैविक खेती करने लगा तो बहुत सी परेशानियों का सामना करना पड़ा। जैविक खेती करना मेरे लिए बहुत बड़ी रिस्क थी। सबसे पहली समस्या पोषण प्रबंधन की थी। फसल में रासायनिक खाद नहीं डाला तो गेहूं एक चौथाई ही निकला।

दूसरी सबसे बड़ी समस्या खरपतवार प्रबंधन की थी। खरपतवार के आगे सारे कृषि वैज्ञानिक भी फेल और किसान के आइडिया भी फेल, एक बार खेत से खरपतवार निकलवाकर फेंक दें तो 15 दिन में दोबारा खरपतवार तैयार हो जाती। ऊपर से महीने-महीने भर तक बरसात की झड़ ऐसे में खेत से खरपतवार कैसे निकालते, फसल का उत्पादन तो न के बराबर आना तया था। लेकिन मैंने हिम्मत नहीं हारी। मैं जैविक खेती करने के लिए मजबूती से खड़ा था। धीरे-धीरे पोषण प्रबंधन के लिए मैंने देशी गोबर की खाद **जिब अमृत** दिया। परंतु देशी खाद देने से खरपतवार बहुत ज्यादा उगने लगे एक बार उखाड़ो 10-15 दिन में फिर तैयार किया। बहुत परेशानी अब क्या करें। एक बार एक एकड़ खेत में 30 मजदूर लगाते हैं तो दूसरी बार भी पैसा खर्च करना पड़ता

है। क्योंकि बरसात डोर चलाने का मौका ही नहीं दे रही थी। फिर मैंने जैविक खेती करने के लिए सबसे अलग हट कर सोचा। मैंने देशी गोबर की खाद तैयार करी। लगभग तीन-चार बोरी, उसमें मैं दो किलो गुड़ मिलाया एक किलो सोया अंकुरित करके उन्हें पीसकर उस खाद में मिलाकर उसे खरपतवार रहित की। फिर उसे दो महीने ढककर रखा। फिर उसे बारीक कर के छलनी में छाना लगाया और छान कर उसे बीज में मिलाकर सीधी बिजाई करा दी।

तीसरी बड़ी समस्या कीट बीमारी प्रबंधन: यह समस्या भी अपने आप में कम नहीं थी लेकिन इल्ली और कीट प्रबंधन के लिए पांच पर्णीय अकी और कीट प्रबंधन के लिए पुराने मटके की छाछ जिसमें आठ से 10 दिन तांबे को डालकर छिड़कने से की और फंगस पर नियंत्रण मिल गया।

पोषण प्रबंधन के लिए जो गोबर की सड़ी हुई गोबर की खाद को तैयार करने का मैंने जो तरीका ढूंढा वह तरीका बहुत ही आसान और उतना ही प्रभावशाली है। इसमें मैंने गोबर की सड़ी हुई खाद में एक किलो सोयाबीन को दो दिन भिगोकर उन्हें मिक्सर में पीस कर ग्रेवी की तरह बना लिया और

उसमें दो किलो गुड़ पानी में घोलकर फिर उसमें देशी गाय का 100 मिली दूध मिलाकर सोयाबीन, गुड़, देशी गाय का दूध और गोबर की खाद सब को मिलाकर बैग में भरकर छाया में रख दिया। तीन महीने बाद उसे छान कर गेहूं के बीज में मिलाकर सीधी बिजाई कर दी।

इसमें बुवाई करते समय थोड़ी परेशानी जरूर आई। लेकिन सफलता इतनी मिली कि मेरी बहुत सारी समस्या खत्म हो गई। गोबर की खाद बैग में भरकर रखने से गोबर में उपस्थित खरपतवार के बीज पूरी तरह से नष्ट हो गए। गुड़ और सोयाबीन का प्रोटीन बैक्टीरिया द्वारा पूरी तरह से न्यूट्रीलाइज कर दिया गया। जो कि पौधों के पोषण का बहुत अच्छा आधार था। और बीज के साथ सीधी बुआई करने से पूरा पोषण फसल को ही मिलता है। और खरपतवार के बीज और पौधे कुपोषित ही रह जाते हैं इस कारण खरपतवार पनप नहीं पाते। और फसल की शुरूआती अवस्था अच्छी बढ़वार लेती है। और जो खाद, बीज के साथ सीधी बोई जानी है वह देशी गोबर की होने से फसल को शुरूआत से लेकर अंत तक पोषण करती है। और पैदावार अच्छी होती है।

यही फार्मूला यदि सरकार प्रसारित करे तो सभी किसान जैविक खेती की तरफ जुड़ सकते हैं। क्योंकि देशी गोबर की खाद लगभग हर किसान के पास उपलब्ध होती है और उत्पादन में भी गिरावट नहीं आती, और खरपतवार भी कम आते हैं। और हमारे देश की रासायनिक खाद का एक विकल्प भी मिल जाएगा। आज जो हमारी सरकार को रासायनिक खाद पर ज्यादा व्यय करना पड़ता है वह भी कम हो जाएगा। और विदेशी करेंसी भी बचेगी। इसी फार्मूले से पर्यावरण, मिट्टी, इंसान और पानी सभी स्वच्छ और सुरक्षित रहेंगे।

पहली हरित क्रांति के बाद से भारत ने आंख मूंदकर रासायनिक खेती पर भरोसा कर लिया और किसानों को रासायनिक खेती के लिए बढ़ावा दिया गया। आज नतीजा यह है कि खेती की लागत तो बढ़ी है साथ ही धरती माता का स्वास्थ्य भी बिगड़ गया है। किसानों को पारम्परिक जैविक खेती के लिए भी समय-समय पर प्रोत्साहन दिया जाता है तो आज हर जगह जैविक खेती का आधारभूत ढांचा बहुत मजबूत होता और आज हम जैविक खेती में टॉप नम्बर पर होते।

जैविक खेती क्यों: आज किसान सबसे ज्यादा परेशान है। क्योंकि जिस परिवेश में वह रहता है वह परिवेश उसे और परेशान कर देता है। कारण जिस फसल को वह पैदा करता है। उसी आनाज को वह खाता है। यही आनाज शहर वाले भी खाते हैं।

लेकिन शहरवासी न तो रासायन खेत में डालने का काम करते हैं और ना ही इल्लीमार छिड़कते हैं और ना तो खरपतवारनाशी दवा छिड़कते हैं और ना ही कीड़ामार दवाई डालते हैं। और ना ही फंगस वाली दवाई खेत में डालते हैं। और किसान ये सब दवाई और रासायनिक खाद खेत में डालते भी और उस रासायनयुक्त आनाज का उपभोग भी करते हैं।

यानी किसान रासायन के सम्पर्क में सबसे ज्यादा रहता है। इस केमिकल का किसान के शरीर पर कितना बुरा असर पड़ता है। यह एक रिसर्च का विषय है। लेकिन इतनी बात तो सच है कि इंसान के शरीर पर इस रासायन का बहुत बुरा प्रभाव पड़ रहा है। जैसा कि बच्चों के शरीर में समय से पहले हार्मोंस का विकसित होना।